अनुबोधन, खण्ड 2, अंक 1, मार्च 2026, पृष्ठ 344–350
ISSN: 3049-4184 (प्रिन्ट), 3108-1185 (ऑनलाइन)
https://doi.org/10.65885/anubodhan.v2n1.2026.033

आदिवासी महिला के जीवन में स्वच्छता का प्रभाव नवसारी जनपद के सन्दर्भ में समाजशास्त्रीय अध्ययन

डॉ. राजेशकुमार सोसा*

प्राप्तिः 20 मार्च 2026 / स्वीकृतः 25 मार्च 2026 / प्रकाशितः 31 मार्च 2026
जर्नल वेबसाइटः https://anubodhan.org

सारांश

भारतीय आदिवासी में सामाजिक संगठन, संस्थाओं, मान्यताओं, संस्कृति, सांस्कृतिक प्रतिमानों, परम्पराओं, रीति-रिवाजों, व सिद्धांतों के आधार पर स्वच्छता की आदतों के प्रति आदिवासी जन समुदाय अपना दृष्टिकोण निर्मित करता है। इसके आधार पर स्वच्छता की आदतों का जीवन में पालन करता है। स्वच्छता के क्षेत्र में हुए संशोधनों के अध्ययन ज्ञात होता है कि गुजरात के आदिवासियों की कुछ प्रजातियाँ विलुप्तता की ओर है। साथ ही दैनिक जीवन में पर्याप्त स्वच्छता की कमी के कारण बीमारियों से उनकी औसत आयु भी कम हो रही है। संशोधनों से यह भी ज्ञात होता है कि गुजरात के आदिवासी समुदायों में मातृ मत्युदर व बाल मृत्युदर भी अधिक है। इसके अतिरिक्त आदिवासियों किशोरियाँ का शाला त्यागने का प्रतिशत भी अधिक है। आदिवासी समुदाय की आर्थिक स्थिति भी अपेक्षाकृत कमजोर है।

प्रस्तुत शोध में नवसारी जिले के आदिवासी किशोरियों में दैनिक स्वच्छता की जानकारी व व्यवहार में परिवर्तन का अध्ययन के साथ साथ पर्याप्त स्वच्छता न बरतने पर उनके जीवन पर इसके प्रभावों का अध्ययन किया गया। यह अध्ययन गुजरात के आदिवासियों हेतु स्वच्छता एवं स्वास्थ्य शिक्षा की प्रभावी नीति बनाने में सहायक सिद्ध होगा। साथ ही ग्रामीण आदिवासियों की संस्कृति में स्वच्छता के नियम, कुरूतियाँ, व्यवहार व इससे जुड़ी भ्रांतियों की जानकारी का उपयोग सकारात्मक पक्षों को प्रोत्साहित करने एवं नकारात्मक पक्षों को मिटाने में किया जा सकता है।

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य गुजरात राज्य के नवसारी जिले के आदिवासी किशोरियों के जन-जीवन में स्वच्छता के प्रभाव का अध्ययन करना है। साथ ही अध्ययन क्षेत्र में आदिवासी

*असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, समाजशास्त्र विभाग, एल. आर. वलिया विनयं एवं पी. आर. मेहता कोमर्स कोलेज, भावनगर (गुजरात) ई-मेल: RAJESHKUMAR.SOSA@gujgov.edu.in

किशोरियों के जीवन में दैनिक स्वच्छता की जानकारी व व्यवहार में परिवर्तन का अध्ययन के साथ साथ पर्याप्त स्वच्छता न बरतने पर उनके जीवन पर इसके प्रभावों का अध्ययन करना है। अध्ययन के उदेश्य में गुजरात के नवसारी जिले के आदिवासी किशोरियों के जीवन में अस्वच्छता की समस्या के कारको अध्ययन करना। अस्वच्छता के कारण उत्पन्न समस्याऐं - सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक व शारीरिक क्षति का अध्ययन करना। समस्याओं के कारकों के आधार पर संभावित हल ढूंढने का प्रयास करना। स्वच्छता के लिए शासन के द्वारा किये जा रहे प्रयासो व रणनीति का अध्ययन करना एवं उचित सुझाव प्रस्तुत करना। अतः शोध में यह सिद्ध होता है कि कर्ता परिस्थिति एवं प्रेरणा के संयुक्त प्रयास से ग्रामीण आदिवासी किशोरियों में स्वच्छता के प्रति सामाजिक परिवर्तन दृष्टिगत हुआ है जो कि शासन के सफल प्रयासों का परिणाम है।

प्रारंभिक

भारतीय आदिवासी में सामाजिक संगठन, संस्थाओं, मान्यताओं, संस्कृति, सांस्कृतिक प्रतिमानों, परम्पराओं, रीति-रिवाजों, व सिद्धांतों के आधार पर स्वच्छता की आदतों के प्रति आदिवासी जन समुदाय अपना दृष्टिकोण निर्मित करता है। इसके आधार पर स्वच्छता की आदतों का जीवन में पालन करता है। स्वच्छता के क्षेत्र में हुए संशोधनों के अध्ययन ज्ञात होता है कि गुजरात के आदिवासियों की कुछ प्रजातियॉ विलुप्तता की ओर है। साथ ही दैनिक जीवन में पर्याप्त स्वच्छता की कमी के कारण बीमारियों से उनकी औसत आयु भी कम हो रही है। संशोधनों से यह भी ज्ञात होता है कि गुजरात के आदिवासी समुदायों में मातृ मत्युदर व बाल मृत्युदर भी अधिक है। इसके अतिरिक्त आदिवासियों किशोरियॉ का शाला त्यागने का प्रतिशत भी अधिक है। आदिवासी समुदाय की आर्थिक स्थिति भी अपेक्षाकृत कमजोर है।

स्वच्छता एवं अस्वच्छता को लेकर पूर्व में हुए अध्ययनों में आदिवासी समुदाय में सामाजिक सांस्कृतिक मूल्य, नियमों पर ध्यान नहीं दिया गया है। इन अध्ययनों से केवल वृहद स्तर पर अस्वच्छता का मानव जीवन पर प्रभावों की जानकारी मिलती है। प्रस्तावित अध्ययन में नवसारी जनपद के आदिवासी किशोरियों के जीवन में स्वच्छता का प्रभाव का अध्ययन किया गया। इसके साथ ही पूर्व से प्रचलित सामाजिक सांस्कृतिक नियमों, परम्पराओं, धारणाओं/मान्यताओं का अध्ययन किया गया। इससे आदिवासी समुदायों में स्वच्छता के लिए पूर्व से प्रचलित सकारात्मक सोच व नियमों पर बल देते हुए नकारात्मक धारणाओं, नियमों को बदलने के लिए शासन की रणनीति बनाने में सहयोग प्राप्त होगा। साथ ही इन अस्वच्छता की समस्याओं के कारको का पता लगाकर समस्या के हल ढूंढने के प्रयासपूर्ति हेतु शोध आवश्यक समझा गया।

गुजरात के विकास में आदिवासी समाज की अर्थ व्यवस्था का अत्यधिक महत्व है। प्रदेश का आर्थिक विकास इन्ही आदिवासी समाज के विकास पर निर्भर करता है। आदिवासी समाज के विकास के लिए अनेक योजनाऐं क्रियान्वित की जा रही है। आदिवासियों की विभिन्न समस्याओं में से एक प्रमुख समस्या पर्याप्त स्वच्छता में कमी के कारण बीमारी, आर्थिक, सामाजिक, शारीरिक क्षति, शिक्षा पर प्रभाव और अस्वच्छता की बीमारियों से होने वाली मौते है। पूर्व में कई शोध इस क्षेत्र में हुए है जो स्वच्छता का मानव जीवन में महत्व व इसकी आवश्यकता को

दर्शाता है। प्रस्तुत शोध में नवसारी जिले के आदिवासी किशोरियों में दैनिक स्वच्छता की जानकारी व व्यवहार में परिवर्तन का अध्ययन के साथ साथ पर्याप्त स्वच्छता न बरतने पर उनके जीवन पर इसके प्रभावों का अध्ययन किया गया। यह अध्ययन गुजरात के आदिवासियों हेतु स्वच्छता एवं स्वास्थ्य शिक्षा की प्रभावी नीति बनाने में सहायक सिद्ध होगा। साथ ही ग्रामीण आदिवासियों की संस्कृति में स्वच्छता के नियम, कुरूतियाँ, व्यवहार व इससे जुड़ी भ्रांतियों की जानकारी का उपयोग सकारात्मक पक्षों को प्रोत्साहित करने एवं नकारात्मक पक्षों को मिटाने में किया जा सकता है।

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य गुजरात राज्य के नवसारी जिले के आदिवासी किशोरियों के जन-जीवन में स्वच्छता के प्रभाव का अध्ययन करना है। साथ ही अध्ययन क्षेत्र में आदिवासी किशोरियों के जीवन में दैनिक स्वच्छता की जानकारी व व्यवहार में परिवर्तन का अध्ययन के साथ साथ पर्याप्त स्वच्छता न बरतने पर उनके जीवन पर इसके प्रभावों का अध्ययन करना है।

अध्ययन के उदेश्य

प्रस्तुत शोध में निम्न उद्देश्यों को ध्यान में रखकर शोधकार्य किया गया है -

1. गुजरात के नवसारी जिले के आदिवासी किशोरियों के जीवन में अस्वच्छता की समस्या के कारको अध्ययन करना।
2. अस्वच्छता के कारण उत्पन्न समस्याऐं - सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक व शारीरिक क्षति का अध्ययन करना।
3. समस्याओं के कारकों के आधार पर संभावित हल ढूंढने का प्रयास करना।
4. स्वच्छता के लिए शासन के द्वारा किये जा रहे प्रयासो व रणनीति का अध्ययन करना एवं उचित सुझाव प्रस्तुत करना।

प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य अस्वच्छता की समस्या के कारकों एवं इसका अन्य सामाजिक समस्याओं से संबंध का अध्ययन किया जाना है। अतः इस अध्ययन के लिए वर्णनात्मक सह अण्वेषणात्मक शोध अभिकल्प को अपनाया गया।

इस शोध विधि द्वारा आदिवासी किशोरियों की संस्कृति को समझने व अस्वच्छता के कारकों एवं प्रभावों को आंकलन करना संभव हो सका। इसके लिए टालकॉट पारसन्स का "सामाजिक क्रिया का सिद्धांत" को ध्यान में रखते हुए आदिवासी किशोरियों के जनजीवन पर स्वच्छता के प्रभाव का अध्ययन किया गया। पारसंस की कृति The structure of Social Action,1937 में सामाजिक क्रिया का सिद्धांत दिया गया, जिसमें उन्होने सामाजिक क्रिया के 3 आधार बताऐं 1. कर्ता, 2. परिस्थिति और 3 प्रेरणा। इसी सिद्धांत के आधार पर प्रस्तुत शोध प्रबंध को मूल रूप दिया गया।

प्रस्तुत विषय आदिवासी किशोरी बालिकाओं के जन-जीवन में स्वच्छता का प्रभाव एक एकीकृत अध्ययन है। इस हेतु गुजरात राज्य के नवसारी जिले को चयन किया गया। अध्ययन में सविचार या सोद्देश्यपूर्ण निर्दशन के आधार पर आदिवासी किशोरी के कक्षा एवं आयु समूह के

सभी विचरणों को समान रूप से ध्यान में रखकर कुल १०० किशोरियों का सोद्देश्यपूर्ण निदर्शन विधि के द्वारा किया गया।

इस अध्ययन में नवसारी जिले के किशोरी आदिवासी का सामान्य परिचय के अंतर्गत अध्ययन में यह पाया कि आदिवासी किशोरियों की संस्कृति में सामान्य स्वच्छता की आदत सम्मिलित है। ज्यादातर आदिवासी परिवारों ने धर्म परिवर्तन कर ईसाई धर्म अपनाया है। अध्ययन में यह पाया गया कि इस धर्म में स्वच्छता को ज्यादा महत्व दिया जाता है जिससे सामान्य स्वच्छता को बढ़ावा मिला है।

किशोरावस्था में आदिवासी किशोरियों में स्वच्छता की सामान्य जानकारी व जागरूकता पाई गई। परन्तु माहवारी स्वच्छता प्रबंधन की जानकारी का अभाव पाया गया। स्कूल स्तर पर जागरूकता कार्यक्रम किया जाना चाहिए। वर्तमान में किशोरी आदिवासी अपने अध्ययनरत साथी से जानकारी लेते है जो कि गलत हो सकता है।

व्यक्तिगत शौचालय की उपलब्धता 2012-13 में मात्र 19 प्रतिशत लोगो के पास थी वहीं बढ़कर आज 91.33 प्रतिशत हो चुकी है। ज्यादातर शौचालय लीच पिट प्रकार के है। शौचालय निर्माण हेतु आर्थिक मदद 12000 प्रोत्साहन राशि के रूप में शासन द्वारा दिया गया।

86 प्रतिशत किशोरियों के घरों में शौचालय 02 अक्टूबर 2014 के पश्चात निर्मित हुए है| जो कि स्वच्छ भारत मिशन ग्रामीण के अंतर्गत निर्मित हुए है। पी.एच.ई. विभाग के अनुसार 97 प्रतिशत लोगो तक 40 एल.पी.एस.डी. पानी की उपलब्धता सुनिश्चित की जा चुकी है| किन्तु अध्ययन में निर्मित शौचालयों के उपयोग हेतु 87 प्रतिशत शौचालयों के समीप ही पानी की पर्याप्त उपलब्धता पाई गई।

अध्ययक्ष क्षेत्र के 99 पतिशत स्कूलों में शौचालय की उपलब्धता पाई गई, जो कि किशोरियों के लिए स्कूल समय के दौरान आवश्यकता पड़ने पर उपयोग किया जा सकता है। यह किशोरियों की शाला में माहवारी के दौरान उपस्थिति सुनिश्चित करने में सहायक है।

अध्ययन क्षेत्र के अंतर्गत लगभग 50 प्रतिशत परिवार के मुखिया का शैक्षणिक स्तर अशिक्षित अथवा प्राथमिक शिक्षा ही है। अध्ययन क्षेत्र में लगभग 90 प्रतिशत लोग कच्चे मकान में रहते है। 66 प्रतिशत किशोरियों का घर गांव में है। 94 प्रतिशत घरों में बिजली की सुविधा नहीं है।

87 प्रतिशत लोग नल और हेण्डपंप का उपयोग पेयजल हेतु करते है किन्तु 13 प्रतिशत लोग असुरक्षित पेयजल स्त्रोत का उपयोग करते है।

अध्ययन में यह पाया गया कि 63 प्रतिशत परिवारों 100 मीटर से कम दूरी पर पेयजल स्त्रोत उपलब्ध है। परन्तु 27 प्रतिशत लोगो को 100 मीटर से ज्यादा दूरी से पानी लाना होता है।

97 प्रतिशत लोग कृषि एवं मजदूरी से अपना जीवन यापन करते है। 83 प्रतिशत लोगों की वार्षिक आय 50 हजार से कम है।

अध्ययन से यह ज्ञात हुआ कि सात घटकों में से व्यक्तिगत पारिवारिक शौचालय में 88 प्रतिशत लोग शौच के लिए जाते है, जबकि 10 प्रतिशत लोग आज भी खुले में शौच के लिए जाते है।

अध्ययन विषय अंतर्गत स्कूल में शौचालय एक प्रमुख घटक है जिसमें 82 प्रतिशत आदिवासी किशोरियॉ स्कूल में शौचालय का उपयोग करती है शेष 18 प्रतिशत शौचालय खराब होने से उपयोग नहीं कर पाती जो कि चिंता का विषय है।

पारिवारिक शौचालय के उपयोग की स्थिति का आंकलन से ज्ञात होता है कि पुरूषों की तुलना में ग्रामीण आदिवासी महिलाऐं ज्यादा शौचालय का उपयोग करती है। अध्ययन में 05 वर्ष से छोटे बच्चों के मल के निपटान के संबंध में यह ज्ञात हुआ कि सिर्फ 42 प्रतिशत छोटे बच्चों के मल का निपटान ही शौचालय में किया जाता है शेष 48 प्रतिशत छोटे बच्चों के मल को असुरक्षित फेंक दिया जाता है। विदित है कि मानव मल के किटाणु विभिन्न माध्यमों से हम तक वापस आ जाते है और हमे डायरिया जैसी बीमारियों से ग्रसित कर देते है।

शौचालय के उपयोग न होने के कारण में मुख्य कारण शौचालय उपलब्ध न होना तथा पर्याप्त पानी की उपलब्धता न होना है। अध्ययन से ज्ञात हुआ कि 85 प्रतिशत लोग शौचालय का उपयोग 02 अक्टूबर 2014 अर्थात स्वच्छ भारत मिशन ग्रामीण के लागू होने के पश्चात प्रारंभ किया है।

भोजन के पूर्व साबुन से हाथ धोना महत्वपूर्ण घटक है, अध्ययन क्षेत्र की आदिवासी किशोरियों में से 77 प्रतिशत ही भोजन के पूर्व साबुन से हाथ धोती है। वहीं शौच के पश्चात साबुन से 82 प्रतिशत आदिवासी किशोरियॉ हाथ धोती है।

14 प्रतिशत आदिवासी किशोरियॉ असुरक्षित पेयजल स्त्रोत से पीने के पानी का लाते है। 93 प्रतिशत आदिवासी किशोरियॉ पेयजल का संग्रहण उंचे स्थान पर ढक कर रखती है। पेयजल संग्रहण पात्र से 84 प्रतिशत आदिवासी किशोरियॉ सुरक्षित तरीके से पानी निकालते है, वहीं 15 प्रतिशत असुरक्षित तरीके से पानी निकालते है। 99 प्रतिशत किशोरियॉ सब्जी को धोकर बनाती है वहीं 96 प्रतिशत किशोरियों ने बताय कि पके भोजन को ढककर रखते है।

अध्ययन से ज्ञात हुआ कि गंदे पानी का उचित निपटान के 04 तरीके अपनाये जा रह है। जिसमें से सर्वाधिक 42 प्रतिशत लोग गंदे पानी का उचित निपटान बागवानी में कर रहे है तथा 24 प्रतिशत लोग गंदे पानी उचित निपटान सोख्ते गड्ढे में कर रहे है, जो कि एक अच्छी आदत है। किन्तु 33 प्रतिशत लोग गंदे पानी का उचित निपटान नहीं करते है।

अध्ययन से ज्ञात हुआ कि प्रतिशत घर में 28 प्रतिशत हेण्डपंप के समीप एवं 23 प्रतिशत किशोरियॉ तालाब में स्नान करती है। इन तालाबों में जानवरों को भी नहलाया जाता है। इन 23 प्रतिशत किशोरियों से सहभागी अवलोकन के दौरान चर्चा में ज्ञात हुआ कि वे विभिन्न प्रकार के चर्म रोग से ग्रसित रहते है।

जैविक कचरे का उचित निपटान 34 प्रतिशत लोग कर रहे है जो कि एक अच्छी आदत है। किन्तु 65 प्रतिशत लोग जैविक कचरे का असुरक्षित निपटान करते है, जो कि चिंता का विषय है।

अजैविक कचरे के उचित निपटान की पर्याप्त व्यवस्था न होने के कारण उचित निपटान नहीं हो रहा है। शौचालय की सफाई 73 प्रतिशत महिलाऐं कर रही है तथा केवल 27 प्रतिशत पुरूष शौचालय की सफाई करते है। चूंकि शौचालय का उपयोग पुरूष व महिला दोनो करते है अतः शौचालय सफाई में भी दोनो की भागीदारी होना चाहिए।

शौचालय के लिए पानी की व्यवस्था 49 प्रतिशत पुरूष व 51 प्रतिशत महिलाऐं कर रही है जो कि आदिवासियों में जेण्डर समानता को दर्शाता है।

माहवारी के उचित प्रबंधन भी स्वच्छता का एक घटक है किन्तु अध्ययन के दौरान यह ज्ञात होता है कि 90 प्रतिशत आदिवासी किशोरियॉ माहवारी के दौरान कपड़े का इस्तेमाल करती है मात्र 17 प्रतिशत किशोरियॉ ही सेनेटरी नेपकिन का उपयोग करती है जो कि चिंता का विषय है।

माहवारी में प्रयुक्त कपड़े का भी किशोरियॉ के द्वारा उचित रख-रखाव/प्रबंधन नहीं किया जा रहा है। 51 प्रतिशत धोकर अंधेरे में सुखाकर पुनः उपयोग करते है। 44 प्रतिशत धूप में सूखा लेते है। मात्र 05 प्रतिशत किशोरियों हर बार नये कपड़े का उपयोग करना ज्ञात हुआ। माहवारी में प्रयुक्त कपड़े/सेनेटरी नेपकिन का निपटान हेतु 50 प्रतिशत किशोरियॉ जमीन में गाड़ देते है 37 प्रतिशत जला देना पाया गया, जो कि एक अच्छी आदत है।

अध्ययन में ज्ञात हुआ कि 99 प्रतिशत स्कूलों में शौचालय सुविधा है जिसके कारण 90 प्रतिशत किशोरियॉ माहवारी के दौरान भी स्कूल जा रही है।

02 अक्टूबर 2014 को स्वच्छ भारत मिशन पूरे देश में लागू किया गया जिसके परिणाम स्वरूप अध्ययन क्षेत्र में जहॉ पूर्व में शौचालय कवरेज 19 प्रतिशत था उसे 2017 में शत-प्रतिशत कर दिया गया। अध्ययन से ज्ञात होता है कि 90 प्रतिशत परिवार शौचालय का उपयोग कर रहे है, जो कि इस योजना की एक ऐतिहासिक उपलब्धि रही।

अध्ययन क्षेत्र की 99 प्रतिशत शालाओं में शौचालय की सुविधा उपलब्ध है जिसमें से अध्ययन से ज्ञात होता है कि 82 प्रतिशत शौचालयों का उपयोग ग्रामीण आदिवासी किशोरिया कर रही है।

अध्ययन से ज्ञात होता है कि 92 ग्रामीण आदिवासी किशोरियॉ मानती है कि अस्वच्छता से बीमारी फैलती है। वहीं 98 प्रतिशात किशोरियॉ मानती है कि शौचालय के उपयोग से बीमारी में कमी आती है जो कि किशोरियों में जागरूकता पैमाना है।

61 प्रतिशत ग्रामीण आदिवासी मानते है कि माहवारी के दौरान महिलाओं को रसोई में नहीं जाना चाहिए वहीं 74 प्रतिशत मानते है कि माहवारी के दौरान महिलाओं को पूजा-पाठ नहीं करना चाहिए। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार वर्ष 2013 में केवल 53 प्रतिशत लोग ही शौच के बाद साबुन से हाथ धोते थे और 38 प्रतिशत लोग ही भोजन ग्रहण करने के पहले साबुन से हाथ धोते थे। अध्ययन से ज्ञात होता है कि भोजन के पूर्व 77 प्रतिशत किशोरियॉ साबुन से हाथ धोती है। शौच के पश्चात ८२ प्रतिशत किशोरियॉ साबुन से हाथ धोती है जो कि एक अच्छी आदत है। अतः स्पष्ट है कि शासन के द्वारा व्यापक प्रचार-प्रसार का परिणाम स्परूप अध्ययन क्षेत्र में साबुन से हाथ धोने की आदत किशोरियों में बढ़ी है।

अध्ययन क्षेत्र में 90 प्रतिशत किशोरियॉ माहवारी के दौरान परम्परागत कपड़ों का ही उपयोग करती है उनमें से 50 प्रतिशत किशोरियॉ इन कपड़ों को अंधेरे में सुखाती है जो कि एक सही प्रक्रिया नहीं है। इस हेतु शासन के प्रयास अपेक्षित है।

एन.एस.एस.ओ. के 69 राउंड सर्वे 2013 के अनुसार छत्तीसगढ़ राज्य में 18 प्रतिशत लोग गंदे पानी का उचित निपटान करते थे जो कि आज बढ़कर 67 प्रतिशत हो गया है। वहीं 11 प्रतिशत लोग ही कचरे का उचित निपटान करते थे, जो कि आज बढ़कर 34 प्रतिशत हो गया है।

अध्ययन क्षेत्र में 86 प्रतिशत सुरक्षित पेयजल स्त्रोत का उपयोग 93 प्रतिशत पेयजल का उचित संग्रहण 98 प्रतिशत सब्जी को धोकर बनाना और 96 प्रतिशत किशोरियों द्वारा भोजन को ढक कर रखने की आदत पाई गई।

किशोरियॉ माहवारी के दौरान स्कूल में शौचालय उपलब्ध न होने की स्थिति में 60 प्रतिशत ही उपस्थित रहती थी जो उपस्थिति बढ़कर 90 प्रतिशत हो गयी है। यह 99 प्रतिशत स्कूलों में शौचालय सुविधा होने के परिणाम स्वरूप हुआ है जिससे अध्ययन में उपयोग की गई उपकल्पना स्वच्छता का बच्चों की शाला में अनुपस्थिति पर प्रभाव पड़ता है, सिद्ध होती है।

73 प्रतिशत स्कूल शिक्षक भी यह मानते है कि शाला में शौचालय उपलब्ध होने से ग्रामीण आदिवासी किशोरियों के शाला त्यागने की दर में कमी आई है।

योजना आयोग की रिपोर्ट "12 वी पंचवर्षी योजना" के अनुसार स्वास्थ्य सुविधा पर आवंटन 06 प्रतिशत से बढ़ाकर 09 प्रतिशत किया गया है। अस्वच्छता के कारण बढ़ती बीमारियों के उपचार हेतु मुफ्त उपचार सुविधा उपलब्ध कराने के लिए स्वास्थ्य बजट वर्षदर वर्ष बढ़ता जा रहा है। अतः दूसरी उपकल्पना स्वच्छता का आर्थिक स्थिति पर प्रभाव पड़ता है भी अध्ययन में प्रमाणित होती है।

अतः शोध के इस अध्याय में यह सिद्ध होता है कि कर्ता, परिस्थिति एवं प्रेरणा के संयुक्त प्रयास से ग्रामीण आदिवासी किशोरियों में स्वच्छता के प्रति सामाजिक परिवर्तन दृष्टिगत हुआ है जो कि शासन के सफल प्रयासों का परिणाम है।

सन्दर्भ

1. Akram, M. (2015). Sociology of Sanitation: Kalpaz Publications. Delhi.
2. Ambedkar, B. R. 1948 (2008), The untouchable, Siddharth Books, Delhi.
3. Azim, S. (2013). An Analysis of Sanitation Deprivation in Karnataka. In, National Conference on Sociology of Sanitation Environmental Sanitation Public Health and Social Deprivation, New Delhi.
4. अकरम, एम. (२०१४), सेनिटेशि निड्स ऑफ इनडिया एंड एन. आर. एच.एम. ए स्ट्रेटेजिक एसेसमेन्ट इन नेशनल रुरल हेल्थ मिशन: एन अनफिनिश्ड एजंडा, सम्पादित, शर्मा एस, एंड जोई, डब्ल्यू, नई दील्ही.
5. ए डिकेड ऑफ़ दी टोटल सेनिटेशन केम्पेन : रेपिड एसेसमेंट ऑफ़, प्रोसेसेस एंड आउटकम्स वोल्यूम-१ , ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नई दील्ही.
6. डॉ. बिन्देश्वर पाठक (२०१३) स्वच्छता का समाजशास्त्र, सुलभ इन्टरनेशनल, सोश्यल सर्विस ऑर्गेनाइजेशन, नई दील्ही.
7. नागला मधु, सोश्यल कंस्ट्रक्शन ऑफ़ हाईजिन एंड सेनिटेशन इन हरियाणा, जर्नल ऑफ़ सुलभ इन्टरनॅशनल, नई दील्ही.
8. स्वच्छ भारत स्वच्छ विद्यालय – एक पुस्तिका (२०१७) मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार.
9. અનીલ એસ. વાઘેલા (२०१८) સ્વચ્છતાનું સમાજશાસ્ત્ર, યુનવિર્સીટી ગ્રંથ નિર્માણ બોર્ડ, અમદાવાદ
10. અનીલ એસ. વાઘેલા (२०१८) સ્વચ્છતાનું સમાજશાસ્ત્ર, કલ્પાઝ પબ્લીકેશન, દિલ્હી
11. રાજન ચૌહાણ (२०१४) સંપૂર્ણ સ્વચ્છતા અભયાનની ગ્રામીણ લોકો પર અસર, સરદાર પટેલ યુનવિર્સીટી, આણંદ.

Copyright © 2026 Author(s). Published by Siri Research Foundation. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution International License (CC BY 4.0).